



हवसनामा : जवानी की भूख-2

“ये सब जवानी की सहज स्वाभाविक प्रतिक्रियायें हैं जिनका आनंद सभी ले रहे हैं। मैं नहीं ले पाया तो यह मेरी कमी थी. पर अब दूसरों को लेते देख मुझमें वह खुशी, वह उत्तेजना पैदा हो रही है। ...”

Story By: इमरान ओवैश (imranovaish)

Posted: Wednesday, February 6th, 2019

Categories: [कोई देख रहा है](#)

Online version: [हवसनामा : जवानी की भूख-2](#)

हवसनामा : जवानी की भूख-2

जब एक बार यह तय कर लिया कि उन दोनों को छूट देनी ही है तो फिर मन से सब नैतिक अनैतिक निकाल दिया। कभी शादी से पहले यह सब वीणा ने भी किया ही था और मेरी बेटी भी इंग्लैंड में रह रही है तो क्या करती न होगी। यह सब जवानी की सहज स्वाभाविक प्रतिक्रियायें हैं जिनका आनंद सभी ले रहे हैं। मैं नहीं ले पाया तो यह मेरी कमी थी। पर अब अगर दूसरों को लेते देख मुझमें वह खुशी, वह उत्तेजना पैदा हो रही है तो क्यों मैं नैतिक अनैतिक के झंझावात में उलझ कर उस सुख से वंचित होऊँ।

फिर खुद को समझा लेने के बाद मैंने एक चीज यह तय की, कि उन दोनों की गैरमौजूदगी में घर में चार स्पाई कैमरे इंस्टाल करवाये जो न सिर्फ लाईव दिखा सकते थे, बल्कि रिकार्डिंग की सुविधा भी देते थे और उन्हें मैं अपने बेडरूम में बैठ कर चुपचाप देख सकता था। दो कैमरे तो वैदेही और खेम सिंह के कमरों में थे और बाकी घर में दो ऐसी जगहों पे थे जहां उनके मिलन या छेड़छाड़ की संभावना हो सकती थी।

वैदेही मेरे बेडरूम में कभी कभार ही आती थी लेकिन दरवाजा खटका के ही आती थी, तो इस बात की कोई संभावना नहीं थी कि वह इस बात को जान सकती कि घर में उन दोनों पर नजर रखी जा रही थी। मुझे असल में सिर्फ उसे देखने का कोई न शौक था और न कैसी भी कोई उत्तेजना ही पैदा होती थी। मेरे लिये कोई भी नजारा तब उत्तेजक होता था जब वे एक दूसरे की निगाहों में होते।

घर पे होता तो उन्हें देखता रहता. ऑफिस होता तो घर आ कर रिकार्डिंग देखता, जिसमें कुछ खास शायद ही कभी हो, क्योंकि वह भी दिन में घर पे कभी कभार ही होती थी। छुट्टी के दिन वह घर पे तो होती थी पर मैं भी होता था तो थोड़ी सावधानी बरतती थी।

इस बीच एक चीज मैंने खास यह महसूस की, कि वे जानबूझकर अपनी उतारी पैंटी, ब्रा, अंडरवियर एक दिन बाद धोते या हटाते थे क्योंकि उन्हें इस चीज का अंदाजा हो गया था कि दूसरा उन्हें उठाता है, सूंघता है। इसकी वजह रखी गयी जगह में परिवर्तन पाया जाना भी हो सकता है। इससे एक चीज तो क्लियर हो गयी कि अंजान कोई नहीं था और दोनों ही एक दूसरे के मनोभावों को बखूबी समझ रहे थे।

फिर एक दिन वैदेही ने दोपहर में मेरी गैरमौजूदगी में उसे शायद किसी ऐसे काम से बाहर भेजा कि उसके जल्दी आने की संभावना न रही हो और फिर खुद उसके क्वार्टर में बंद हो कर एकदम नंगी हो गयी।

उस दिन पहली बार मैंने उसका शरीर देखा। जवानी के दिनों से मैं कितना बेकार मर्द रहा था, इसका अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि फिल्मों और मैगजींस छोड़ दें तो अपने जानने वालों में मैं पत्नी के सिवा अब यह दूसरा नग्न शरीर देख रहा था।

वह निश्चित ही एक आकर्षक शरीर रखती थी ... कंचन सी कामनीय काया, दुग्ध सा उज्ज्वल शरीर, स्निग्ध त्वचा, बड़े संतरों जितने अवयव जिनकी तनी हुई श्यामल चोटियां। गोल कंधे, पतली कमर, सपाट उदर और गोल मांसल नितंब, पूर्ण गोलाई लिये गुदाज जांघें.. उदर की ढलान पर हल्के-हल्के काले बाल जो जैसे योनिस्थल की रक्षार्थ नियुक्त हों।

वह खेम सिंह के बिस्तर पर फैल गयी और खेम सिंह के अंडरवियर को अपने चेहरे पर डाल लिया। तत्पश्चात्, वह अपने शरीर को सहलाती, मसलती बिस्तर पर मचलने लगी। कभी अपने पुष्ट अवयवों को मसलती, कभी चूचुकों को खींचने लगती, कभी अपने पेट पर बेहद कामुक अंदाज में हाथ फिराते नीचे ले जाती और अपनी योनि को छेड़ने लगती, कभी तिरछी हो कर अपने नितम्बों को दबाने सहलाने लगती।

थोड़ी देर की इस अवस्था के बाद वह दोनों टांगों घुटनों से मोड़े, फैला कर चित लेट गयी और एक हाथ से खेम सिंह के अंडरवियर को चेहरे पर रखे, सूंघती दूसरे हाथ से अपने भगांकुर को तेजी से रगड़ने लगी, जिससे उसके शरीर में लहरें पड़ने लगीं।

और फिर चर्मोत्कर्ष पर पहुंच कर उसने चड्डी चेहरे से हटा कर अपनी योनि से सटा कर दबा दी और अकड़ गयी। निश्चित ही इस अवस्था में जो कामरस निकला होगा, वह उस अंडरवियर तक भी पहुँचा होगा।

इसके बाद उसे थोड़ी देर लगी संभलने में और फिर उठ कर उसने खेम सिंह की चड्डी वहीं टांग दी, जहां से उठाई थी और अपने कपड़े वापस पहन कर वहां से चली गयी।

रिकार्डिंग के हिसाब से दो घंटे बाद खेम सिंह क्वार्टर में पहुंचा और सबसे पहले उसने अपनी अंडरवियर ही चेक की थी, जैसे उसे यकीन रहा हो। जाहिर है कि दो घंटे में बंद कमरे में वह गीलापन सूख तो न गया होगा। वह जांघिये के उसी खास हिस्से को मुंह से लगा कर सूंघने लगा और बड़ी देर तक सूंघता रहा।

जाहिर है कि उसे मेसेज मिल गया था जिसका जवाब उसने अगले दिन दिया।

मेरे ऑफिस और वैदेही के कालेज जाने के बाद जब वह अकेला था तो उसने वैदेही के रूम में आ कर, उसके बिस्तर पर लेट कर और वैदेही की पैटी लेकर लगभग वही प्रक्रिया दोहराई।

पहले जब देखा था तब मैं दूर से उसका लिंग नहीं देख सका था लेकिन इस बार देखा ... वह मुझसे डेढ़ गुना तो जरूर था। जरूर वैदेही ने इसे किसी तरह देख लिया होगा और हो सकता कि उनके बीच पनपे आकर्षण की शुरुआत यहीं से हुई हो। किसी लड़की की नजर में वह निश्चित ही गजब का लिंग था।

अपनी उत्तेजना के चरम पर पहुंच कर जब वह स्खलन की अवस्था में आया तो उसने वैदेही की पैंटी से लिंग को दबोच लिया और अपना सारा वीर्य उसी में उगल दिया। इसके बाद वह कमरे की सफाई करके चला गया।

शाम को पांच बजे जब वैदेही वापस आई तो उसने भी आते ही सबसे पहले अपनी पैंटी चेक की और जाहिर है कि वह वीर्य से बुरी तरह गीली रही होगी जिसे वह नाक से लगा कर कुछ देर सूंघती रही.. फिर जीभ से स्पर्श करते उसके स्वाद को भी महसूस करने की कोशिश की।

यानि दोनों ने अपनी स्वीकृति का सिग्नल इस बहाने एक दूसरे को दे दिया था। अब इंतजार रहा होगा उन्हें मौके का जो कि वैदेही के लिये कोई मुश्किल नहीं थी। वह किसी भी ऐसे दिन छुट्टी मार कर घर बैठ सकती थी जब मैं ऑफिस में होऊं।

चार दिन बाद ही वह नौबत आ गयी जब उसने मुझे बताया कि आज उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं तो कालेज नहीं जायेगी। मेरे लिये मंतव्य समझना मुश्किल नहीं था इसलिये ऑफिस में उस रोज मेरा मन न लगा।

जहनी रौ बार-बार इसी दिशा में भटकती रही कि घर पे क्या हो रहा होगा। मैं चाहता तो छुट्टी करके घर जा सकता था लेकिन फिर उनका काम बिगड़ जाना था। मैं तो उन्हें मौका देना चाहता था। यह अलग बात थी कि मन लगातार अवश्यंभावी कल्पनाओं के सागर में गोते लगाता रहा।

उस रोज खुद को रोकने की लाख कोशिश के बावजूद मैं एक घंटा पहले ही घर पहुँच गया और जाते ही वैदेही की ऐसे खैरियत पूछी जैसे उसकी फिक्र रही हो। वह खुश थी, उसकी आंखों में चमक थी, उसके चेहरे पर तृप्ति के भाव थे और उसने खुद को 'अब बेहतर हूँ' की अवस्था में ही प्रदर्शित किया।

जो घटना था, घट चुका था.. खेम सिंह की भावभंगिमाओं ने भी इसी चीज को जाहिर किया।

जैसे तैसे मैंने चाय नाश्ते की औपचारिकताओं वाला वक्त निकाला और फिर खुद को बेडरूम में बंद कर लिया।

कहानी मेरे ऑफिस जाने के फौरन बाद तो नहीं शुरू हुई थी, बल्कि थोड़ा वक्त तो खेम सिंह ने साफ सफाई के काम ही निपटाये थे। फिर वैदेही ने उसे कमरे में बुला लिया था।

उसने अपनी वह पैटी निकाली, जिसपे खेम सिंह ने वीर्यपात किया था और उससे उसके बारे में पूछने लगी। खेम सिंह बस दांत दिखाता रहा तो उसने खेम सिंह को शायद अपना लिंग निकालने को कहा। थोड़े सकुचाये, थोड़े शर्माये खेम सिंह ने अपना पजामा, जांघिये समेत नीचे कर दिया और उसका मुर्झाया लिंग बाहर आ गया।

वैदेही घुटनों के बल उसके सामने बैठ गयी और चेहरा एकदम पास करके उसे देखने लगी, जैसे किसी नियामत को देख रही हो। उसके हाव भाव से मेरे लिये यह तय कर पाना मुश्किल था कि उसने यह चीज पहले कभी देखी थी या पहली बार देख रही थी। देखने का अंदाज तो नदीदों वाला था।

फिर उसने उंगली से टच किया... एकदम किसी बच्चे के से अंदाज में... और उसकी निगाहों का ताप खेम सिंह के लिंग पर असर कर रहा था। लिंग में पड़ी सिकुड़न मिट रही थी, चमड़ी खिंच रही थी और वह लंबा हो रहा था। शिश्नमुंड को ढकने वाली चमड़ी अब पीछे सरक रही थी और टमाटर जैसा शिश्नमुंड यूँ बाहर आ रहा था जैसे किसी दुल्हन का चेहरा घूंघट की आड़ से बाहर आ रहा हो।

देखते-देखते वह पूरे आकार में आ गया... अब वह वैदेही के चेहरे के सामने किसी योद्धा की

तरह तना हुआ था। उसकी लंबाई मोटाई जरूर वैदेही में विचलन पैदा कर रही होगी पर मुझे वह सब देखते वक्त वैसी उत्तेजना महसूस हो रही थी जैसी शायद ही पहले कभी की हो।

वैदेही ने उसे उंगली के सहारे ऊपर उठाया और अपना चेहरा उससे यूँ सटाया कि उसकी ठुड्डी खेम सिंह के अंडकोषों के साथ टच हो गयी। वह लिंग वैदेही के पूरे चेहरे को पार कर रहा था... और वैदेही आंखें बंद करके उसी अवस्था में स्टैचू बनी उसे जैसे बस सूँघ कर, उसका स्पर्श पा कर रोमांचित होती थरथरा रही थी।

खेम सिंह बेचारा शायद उसकी अवस्था ठीक से नहीं समझ पा रहा था और कौतुक से उसे देख रहा था।

थोड़ी देर बार वैदेही ने आंखें खोलीं और खुद ही उसके कपड़े उतारने लगी। खेम सिंह ने भी कपड़े उतरवाने में सहयोग दिया और फिर वह एकदम नग्न हो गया जिसका लिंग किसी भन्नाये चीते की तरह आक्रामक मुद्रा में वैदेही को चुनौती दे रहा था।

वैदेही ने उसे बिस्तर पे गिरा लिया और खुद उसके पैरों पर बैठ गयी। अब पहली बार उसने झुकते हुए खेम सिंह के लिंग को हाथ में लिया। ऊपर नीचे सहलाया और उसके अग्रभाग को अपने होंठ खोल कर अंदर दबा लिया.. फिर उसकी आंखें बंद हो गयीं।

कोई लड़की पहली बार में तो इस तरह नहीं करती, उल्टे शर्माई और सिकुड़ी सिमटी रहती है। यह चीज जाहिर कर रही थी कि यह सब उसके लिये पहली बार या नया नहीं था लेकिन अब तक उसके जो हावभाव रहे थे, उनसे यह जरूर जाहिर हो रहा था कि यह नियामत लंबे समय बाद उसे मिली थी।

इधर उसके मुंह की गीली गर्माहट अपने लिंग पे महसूस करते खेम सिंह की आंखें भी

आनंद के अतिरेक से बंद हो गयी थीं। कुछ देर दोनों उसी अवस्था में स्थिर पड़े रहे फिर वैदेही ने पहले आंखें खोलीं और मुंह को नीचे करती लिंग को अंदर लेने की कोशिश की, जिसमें आधी ही सफल हो सकी। बाकी लिंग को उसने अपनी मुट्ठी में दबोच लिया।

खेम सिंह भी अब आंखें खोल कर उसे देखने लगा।

थोड़ी देर बड़े आक्रामक अंदाज में चूषण करने के उपरांत वह खेम सिंह की जांघों पर बैठे-बैठे सीधी हो गयी और उसने अपनी टीशर्ट उतार फेंकी। नीचे काली ब्रा में कैद उसके तने हुए वक्ष अब खेम सिंह के सामने थे। वैदेही ने उसके हाथ पकड़ कर अपने वक्षों पर रख दिये और थोड़ा जोर दिया, जो कि इशारा था। खेम सिंह दोनों हाथों से उसके वक्ष दबाने लगा। जबकि वैदेही ने दबवाते-दबवाते ही अपने हाथ पीछे ले जा कर ब्रा अनहुक कर दी और उसे कंधों से फिसल जाने दिया।

अब उसके गोरे गुदाज स्तन अपनी तनी हुई श्यामल चोटियों समेत खेम सिंह के सामने थे... वह थोड़ा आगे होती उस पर इस तरह झुक गयी कि उसके वक्ष खेम सिंह के चेहरे से टकराने लगे। कुछ पल वह रगड़ती रही, फिर एक वक्ष की चोटी खेम सिंह के खुले होंठों में फंसा दी। वह चुसकने लगा और वैदेही चेहरा ऊपर उठाये, उस आनंद को महसूस करती रही। एक चुसक चुका तो उसने दूसरे स्तन का अग्र भाग दे दिया और खेम सिंह फिर चुसकने लग।

इस बीच वह लगातार अपने दोनों हाथों से वैदेही की नग्न और चिकनी पीठ को बड़े कामुक अंदाज में सहलाता रहा था। नीचे वैदेही ट्राउजर पहने थी, जिसे उसने पैंटी समेत इतना तो नीचे खिसका दिया था कि उसके दूध से नितंब आधे बाहर आ गये थे।

जब काफी चुसाई हो चुकी तो वैदेही सीधी हो गयी। उसने थोड़ा ऊपर उठ कर, थोड़ा टेढ़े होते ट्राउजर और पैंटी उतार फेंका और उसके उदर की चिकनी ढलान अनावृत हो गयी जो

आज एकदम सफाचट थी... यानि उसने पहले से ही तैयारी कर रखी थी। अब वह फिर खेम सिंह के ऊपर चढ़ आई और उसने अपनी योनि ही उसके चेहरे पर रख दी और बड़े कामुक अंदाज में अपनी पतली कमर को लोच देती रगड़ने लगी।

निश्चित ही उसकी योनि से बहता पानी खेम सिंह के चेहरे को नम कर रहा होगा पर वह भी तो उसी खुशबू को पैंटी में सूंघता फिरता था। आज तो वही योनि उसके मुंह पर थी... फिर वैदेही ने अपनी कमर स्थिर कर दी और दोनों हाथों से उसके बाल दबोच कर अपनी योनि उसके होंठों से टिका दी।

मैं इससे ज्यादा देख नहीं सकता था लेकिन अंदाजा लगा सकता था कि वह उसके भगोष्ठों को खींच रहा होगा, उसके भगांकुर को कुरेद रहा होगा, अपनी नुकीली जीभ से योनिभेदन कर रहा होगा। यह कल्पनायें मुझे बेहद उत्तेजित कर रही थीं और मैं अपने लिंग में वही तनाव और ऊर्जा महसूस कर रहा था जो कभी जवानी में महसूस करता था।

फिर इसका भी अंत हुआ, वह शायद काफी ज्यादा गर्म हो गयी थी तो उसने खेम सिंह के सर को परे झटक दिया और पीछे हटती उसके लिंग के पास आ गयी जो कठोर और तना हुआ पेट पर टिका था। वैदेही ने बड़े सेक्सी अंदाज में खेम सिंह को देखते उसे उठाया, मुंह में लार बना कर उस पर उगल दी और हाथ से मल दी... फिर थोड़ा उठ कर शिश्नमुंड को अपनी योनि से सटाया और उस पर जोर डालती बैठती चली गयी।

उसका मुंह खुल गया और चेहरे पर दर्द की रेखायें उभर आईं लेकिन खेम सिंह के सीने पर हाथ टिकाये वह बैठती गयी जब तक कि समूचा लिंग उसके नितंबों के नीचे गायब न हो गया।

इसके बाद वह कमान सी होती खेम सिंह के चेहरे पर झुक गयी और अपने होंठों को उसके होंठों से सटा दिया और दोनों एक प्रगाढ़ चुंबन में व्यस्त हो गये। इस बीच उसने अपनी

कमर स्थिर रखी थी। फिर उठ गयी और सीधी बैठ गयी... उनके आसन से तय था कि उसकी योनि ने खेम सिंह का पूरा लिंग अंदर ले रखा था। फिर वह अपने हाथों से अपने वक्षों को मसलती बेहद मादक अंदाज में अपने शरीर को आगे पीछे इस तरह लहरें देने लगी कि योनि को घर्षण मिलता रहे।

मैं समझ सकता था कि खेम सिंह किस तरह के आनंद से दो चार हो रहा होगा। दोनों कामुक अंदाज में एक दूसरे को देख रहे थे। काफी देर वे उसी पोजीशन में मजे लेते रहे, फिर वैदेही पीछे होती इस तरह लेटी कि खेम सिंह की टांगें फैलती हुई उसके नीचे से निकल गयीं और वह उठ कर बैठ गया।

अब आसन और था.. वैदेही टांगें फैलाये चित थी और खेम सिंह घुटने मोड़ कर सीधा होता उस पर लद गया था। लिंग उसी प्रकार वैदेही की योनि में फंसा हुआ था। अब वह कभी वैदेही के होंठ चूसता तो कभी उसके चुचुकों को चुभलाने लगता। इस बीच उसकी कमर लगातार स्तंभन कर रही थी।

धीरे-धीरे यह गति तेज होती गयी.. खेम सिंह ने दोनों हाथ बिस्तर पर कुहनियों समेत इस तरह टिकाये थे कि उसका वजन उन्हीं पर रहे और अपनी संपूर्ण गति से धक्के लगाने लगा। वैदेही भी नीचे से कमर उठा-उठा कर बराबर सहयोग कर रही थी। मैं बेड को बुरी तरह हिलते हुए देख सकता था।

इस तूफानी दौर का अंत तब हुआ जब वैदेही लता की तरह उससे लिपट गयी और कुछ स्ट्रोक के बाद वह भी उससे सख्ती से चिपक गया। थोड़ी देर तक दोनों वैसे ही एक दूसरे को दबोचे पड़े रहे, फिर अलग हुए तो वैदेही ने अपनी टीशर्ट उठा कर उसका लिंग भी पोंछा और अपनी योनि से बहते वीर्य को साफ करने लगी।

तत्पश्चात दोनों एक दूसरे से सट के लेट गये और कुछ बातें करने लगे। जाहिर है कि बदन

की गर्माहट और जवानी का जोश उन्हें कितनी देर शांत रखता। जल्दी ही वे फिर एक दूसरे से रगड़ने चिपकने लगे।

और थोड़ी रगड़ा रगड़ी के बाद दोनों सिक्सटी नाईन की पोजीशन में आ गये। पहले वैदेही उसके मुंह पर योनि टिकाये नीचे जा कर उसके लिंग को चूसने लगी और फिर खेम सिंह ऊपर हो कर अपने लिंग से वैदेही के मुख का भेदन करता उसकी योनि को चाटने लगा। यह नये दौर की शुरुआत थी जिसमें जल्दी ही वे तैयार हो गये।

इस बार वैदेही ने स्वयं को डॉगी स्टाईल में कर लिया और खेम सिंह ने घुटनों के बल खड़े होते पीछे से लिंग प्रवेश करा दिया और उसके नितम्बों को दबोचने हुए आघात लगाने लगा। वैदेही भी सुविधाजनक रूप से खुद को आगे पीछे कर रही थी। दोनों की कमर की एक लयबद्ध थिरकन कमरे के वातावरण को गर्म करने लगी।

काफी देर तक वह इसी आसन में इधर उधर होते स्तंभन का आनंद लेते रहे। कभी खेम सिंह इस घुटने को उठा लेता तो कभी उस घुटने को... कभी वैदेही दायीं टांग को सीधी कर के उठा लेती कभी बायीं टांग को और कभी खेम सिंह उसे बेड के किनारे खींच कर खुद नीचे उतर कर खड़ा हो जाता और जोर जोर से धक्के लगाने लगता।

इस बीच शायद वैदेही का स्खलन हो गया था लेकिन जब खेम सिंह चर्मोत्कर्ष पर पहुंचने लगा तो उसने लिंग बाहर निकलवा लिया और घूम कर उसे मुंह में लेती हाथ से सहलाने लगी... जिससे उत्तेजना के शिखर पर पहुंच कर जब खेम सिंह ने वीर्य की पिचकारियां छोड़ीं तो कुछ उसके मुंह के अंदर गयीं तो कुछ चेहरे पर... यह मेरे लिये बेहद सनसनीखेज नजारा था, क्योंकि ऐसा मैंने बस या फिल्मों में देखा था या चूँकि थोड़ी उत्तेजना प्राप्त के लिये कभी कभार अंतर्वासना पढ़ता हूँ तो यहां पढ़ा था लेकिन जो मुझे अपनी संस्कृति के हिसाब से असंभव ही लगता था।

लेकिन जाहिर है कि मेरा सोचना गलत साबित हुआ था और अब शायद नयी उम्र के युवाओं के लिये यह सहजवृत्ति है।

इस स्वलन के पश्चात वे काफी देर शिथिल पड़े रहे लेकिन अंततः एक बार फिर तैयार हुए और उसी अंदाज में संभोग का एक जबरदस्त दौर चला जो पहले दोनों बार की अपेक्षा थोड़ा और लंबा चला था।

उन दोनों को देखते मुझे जीवन में शायद पहली बार उस उत्तेजना का अनुभव हुआ था जिससे मैं अब तक अपरिचित रहा था और यही भूख मुझे आदी बना गयी इन नजारों का, जहां खुद पार्टिसिपेट करने की कोई खाहिश नहीं थी, बस चाह थी उनके बीच बनते प्राकृतिक सम्बंधों के मूक गवाह बन कर कामोत्तेजना को प्राप्त करने की।

उस दिन इतना ही हुआ था.. फिर उनके बीच यह लगभग रोज होने लगा। मैंने कभी ऐसा कुछ जाहिर करने की कोशिश नहीं की, कि मुझे उन पर किसी भी तरह का कोई शक है। अक्सर मेरे वर्किंग डेज में वैदेही मेरे आने से थोड़ा पहले आ जाती थी और वे निपट लेते थे। छुट्टी के दिन मैंने दो घंटे घर से बाहर रहने का रूटीन बना लिया कि उन्हें मौका मिल सके और कभी नहीं मिल पाता था तो बंगले के साइड में वह स्टोर था जिसका लगभग हमेशा बंद रहने वाला दरवाजा खेम सिंह के क्वार्टर की तरफ खुलता था.. वह उनके काम आ जाता था जहां वे रात को काम बना लेते थे।

यह अलग बात थी कि मुझे उस संभावित जगह का आइडिया था तो एक कैमरा वहां भी मौजूद था।

वैदेही पढ़ाई के सिलसिले में तीन साल वहां रही और लगभग वे रोज ही सेक्स करते... ओरल, वेजाइनल, एनल। कैसा भी, कुछ भी बाकी नहीं रखा था.. यह सिलसिला बस तभी बंद होता था जब दोनों में से कोई गांव जाता या बीच में पंद्रह दिन के लिये आर्यन और

सोनिया दिल्ली आये थे।

वैदेही की पढ़ाई पूरी होने के साथ उसे किसी विदेशी कंपनी में नौकरी मिल गयी और वह चली गयी... अगले एक साल के अंदर खेम सिंह भी गांव से लुगाई ब्याह लाया, लेकिन मुझे उनका आपसी संभोग देखने में रुचि नहीं थी तो खेम सिंह के कमरे से कैमरा हटवा दिया था।

बस वैदेही के रहते जो तीन साल गुजरे.. उन्हीं तीन सालों में मुझे वह उत्तेजना मिली जो जीवन में आगे पीछे फिर कभी न हासिल हुई। यह कहानी सुनाने का मकसद कोई सांत्वना या प्रोत्साहन पाना नहीं... बस मन की एक गांठ थी जो न जिंदगी में कभी किसी से कह पाया और न कह पाऊंगा। बस इमरान के सहारे इस मंच तक पहुंचा दी और मेरे लिये इतना ही काफी है।

(समाप्त)

दोस्तो, समाज में बहुत से ऐसे लोग होते हैं जिनके साथ सेक्स से सम्बंधित ऐसे किस्से जुड़े होते हैं जो वे चाहते हुए भी किसी से कह नहीं पाते लेकिन हमेशा एक कसक की तरह चुभते रहते हैं, टीसते रहते हैं.. अगर इस मंच पर साझा करने लायक कोई ऐसा किस्सा आपके पास है और खुद उसे कह पाने में सक्षम नहीं तो मुझे बता सकते हैं। आपकी गोपनीयता के साथ आपके मन में दबी वह गांठ मैं अपने शब्दों में तराश कर यहां प्रस्तुत कर दूंगा। बाकी मेरी मेहनत के विषय में या अपनी बीती बताने के लिये मुझसे मेल या फेसबुक पर संपर्क कर सकते हैं...

imranrocks1984@gmail.com

<https://www.facebook.com/imranovaish2>

Other stories you may be interested in

अजीब दासतां है ये-1

दोस्तो, आज मैं आपको अपनी खुद की एक बहुत ही अजब गज़ब कहानी सुनाने जा रहा हूँ। हर इंसान की जीवन में बहुत सी घटनाएँ घटती हैं, जो उसके जीवन में उसे कई तरह के सबक देकर जाती हैं। मैं [...]

[Full Story >>>](#)

कमसिन कुंवारी चूत की कामवासना-5

पिछले भाग में आपने पढ़ा कि मैं सोनू की चूत की चुदाई कर रहा था। इसी बीच उसने मुझसे अपने मम्मी और पापा की चुदाई की बातें करना शुरू कर दीं। मैं उसकी बातें सुनकर और ज्यादा जोश में आ [...]

[Full Story >>>](#)

हवसनामा : जवानी की भूख-1

'हवसनामा' के अंतर्गत यह अगली कहानी एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है जो उच्च स्तरीय सरकारी सेवा में है और 'सेक्स' के पैमाने पर बेहद साधारण रहा है, लेकिन एक मुकाम फिर ऐसा भी आया है जब उसने इस [...]

[Full Story >>>](#)

कालबाँय बन कर पहली ग्राहक को चोदा

दोस्तो, मेरा नाम रॉकी है और मैं राजस्थान के कोटा से हूँ। मेरी उम्र 20 साल है। अगर मैं अपनी सेक्स की दास्तान के बारे में बात करूँ तो करीब-करीब एक सौ बार मैं अपनी चाची की चूत चोद चुका [...]

[Full Story >>>](#)

कमसिन कुंवारी चूत की कामवासना-4

अभी तक आपने पढ़ा कि मैंने सोनू की सील तोड़ दी थी। लेकिन उसकी चुदाई करने का मेरा भी बहुत मन था। मगर मुझे नहीं पता था कि वह मुझसे चुदाई करवाने के लिए और ज्यादा बेचैन हो चुकी है। [...]

[Full Story >>>](#)

